भारतीय मजदूर संघ

एक नज़र में

श्रमिको का राष्ट्रीयकरण
उद्योगो का श्रमिकीकरण
राष्ट्र का औद्योगिकरण

-भामस

प्रथम संस्करण : 5000 प्रतियां
वर्ष प्रतिपदा : 5 चैत्र 2058
तद्नुसार : 26 मार्च 2001

प्रकाशक
हसमुख भाई दवे
महामंत्री
भारतीय मजदूर संघ
राम नरेश भवन, तिलक गली
चूना मण्डी, पहाड़ गंज
नई दिल्ली -110055
दूरभाष : 362 4212, 362 0654
फैक्स : 91-11-3517307

भारतीय मजदूर संघ (भामस): सिंहावलोकन

श्रमिक संघ क्षेत्र में व्याप्त जिस प्रकार की परिस्थिति के दृष्टिगत् **भारतीय मजदूर संघ** अस्तित्व में आया उस के कारण श्रमिक संघ आन्दोलन में इसने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है ।

भारतीय मजदूर संघ का निर्माण स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रख्यात सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जयन्ती **२३ जुलाई १९५५** को भोपाल में हुआ । इस संबंध में दो बातें ध्यान में रखना आवश्यक है :–

(क) उस समय विद्यमान अन्य केन्द्रीय श्रम संघ पूर्व में विद्यमान किसी न किसी श्रम संगठन की आपसी फूट के कारण विखंडित अंश पर आधारित थे किन्तु भारतीय मजदूर संघ का निर्माण विखंडन के आधार पर नहीं हुआ । अतः यह अत्यन्त आवश्यक था कि भारतीय मजदूर संघ अपना संगठनात्मक ढांचा अपने बलबूते धरती में जड़ें जमाते हुए तैयार करे जबकि निर्माण के समय इसके पास एक भी यूनियन सदस्य, कार्यकर्ता, कार्यालय, धनकोष अथवा इस प्रकार का अनुभव भी नहीं था । यह विशुद्ध रूप में शून्य से सृष्टि निर्माण के प्रयास का शुभारम्भ था ।

(ख) प्रारम्भ ही से यह पूर्ण रूपेण स्पष्ट था कि इस संगठन का आधार प्रखर राष्ट्रवाद होगा । यह एक जेन्यून श्रमिक संघ के नाते कार्य करेगा । अन्य श्रमिक संघों की भांति जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष दलगत् राजनितिक दलों से संबंध रहता है यह संगठन दलगत् राजनीति से निरपेक्ष रहेगा ।

भारतीय मजदूर संघ उदय के परिणामस्वरूप समूचे श्रमिक क्षेत्र में वस्तुतः एक नये युग का श्रीगणेश हुआ है ।

संगठनात्मक प्रगति

सन् १६५५ तक भारतीय मजदूर संघ की रचना का सपना उन दृढ़व्रती कार्यकर्ताओं की केवल आंखों में था जो **मां. श्री दत्तोपंत ठेंगडी**, सुविख्यात विचारक व बुद्धिजीवी, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन स्वेच्छा से समाजसेवा हितार्थ अर्पित कर दिया था, के मार्गदर्शन में भोपाल में एकत्रित हुए और निःस्वार्थ भाव से संगठन कार्य के लिये अपने को समर्पित कर दिया ।

सर्वप्रथम, स्वयं स्वीकृत और घोषित श्रेष्ठ रीति–नीति कार्य पद्धिति के आधार पर एक सुदृढ़ संगठनात्मक ढांचा खड़ा करने की चुनौती सन्मुख थी । मान्यवर श्री ठेंगडी जी द्वारा संपूर्ण देश का सतत् प्रवास और स्थानीय तौर पर प्राप्त सहयोग तथा उनके सहयोगियों के अथक प्रयासों के फलस्वरूप यहां–वहां, इक्का–दुक्का यूनियनों का निर्माण होने लगा किन्तु ट्रेड यूनियन के विस्तृत मानचित्र पर यह इक्का–दुक्का यूनियने छोटे बिन्दुओं की तरह उस समय महत्वहीन लगती थी । इनमें से अधिकांश युनियनें असंगठित क्षेत्र में थीं । धीरे–धीरे, जैसे–जैसे अनुभव बढ़ता गया, युनियनों का गठन महत्वपूर्ण उद्योगों में भी होने लगा । प्रदेशों में यथेष्ठ विस्तार होने के पश्चात् प्रदेश समितियों का गठन भी किया जाने लगा ।

इस प्रकार अपने निर्माण के बारह वर्ष उपरान्त सन् १६६७ दिल्ली में भारतीय मजदूर संघ का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ, राष्ट्रीय कार्यसमिति गठित हुई तथां श्री दत्तोपंत ठेंगडी प्रथम महामंत्री निर्वाचित हुए । उस समय तक भारतीय मजदूर संघ के साथ ५४१ यूनियने सम्बद्ध हो चुकी थी और कुल सदस्यता २,४६,६०२ थी ।

इसके पश्चात् भारतीय मजदूर संघ ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और इसके पग प्रगतिपथ पर निरंतर आगे ही आगे बढ़ते गये । सन् १६६७ में जो सदस्यता **२,४६,६०२** थी वह सन् १६८४ में बढ़कर

१२,११,३३५ हो गई और केन्द्रीय सरकार ने सभी केन्द्रीय श्रम संघों की सदस्यता सत्यापन के परिणामस्वरूप भारतीय मजदूर संघ को देश का दूसरे क्रमांक का केन्द्रीय श्रम संगठन घोषित किया । सन् १९८९ को आधारवर्ष मानकर केन्द्रीय सरकार द्वारा सभी केन्द्रीय श्रम संघों की सदस्यता सत्यापन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई जिसका परिणाम **केन्द्रीय श्रम मंत्रालय पत्र क्र. एल/६००११/२/८४-१ आर/(आईएमपी-१) दिनांक २६/२७ दिसम्बर १९९६ के अनुसार भारतीय मजदूर संघ ३१,१७,३२४ सदस्यता के साथ प्रथम क्रमांक पर देश का सबसे बड़ा केन्द्रीय श्रम संगठन घोषित किया गया ।**

सदस्यता सत्यापन के लिये श्रम मंत्रालय, भारत सरकार ने जिन ४४ उद्योगों को घोषित् किया था, उन सभी में भारतीय मजदूर संघ से सम्बद्ध यूनियनें कार्यरत् हैं ।

वर्ष १९९९ के अंत तक भारतीय मजदूर संघ की सदस्यता ३२ औद्योगिक महासंघों के अन्तर्गत लगभग ६५,००,००० है जो कि सभी प्रदेशों में फैली हुई है ।

कुछ एक विशेषताएं

भारतीय मजदूर संघ मजदूरों का, मजदूरों के लिए एवं मजदूरों द्वारा संचालित विशुद्ध ट्रेड यूनियन संगठन है । यह दलगत् राजनीति एवं व्यक्तिगत् नेतागिरी से ऊपर है । देशहित की चौखट के भीतर उद्योग व मजदूर हित इसे मान्य है । वर्ग संघर्ष नहीं, अपितु अन्याय के विरूद्ध संघर्ष इसका घोष वाक्य है । राष्ट्रहित में अधिकतम् उत्पादन तथा केवल प्रतिरक्षा जैसे उद्योगों पर राज्य का पूरा नियंत्रण होना चाहिए और उद्योगों की जवाबदेही समाज के प्रति होनी चाहिए । इसकी मान्यता है कि **औद्योगिक संबंधों में उपभोक्ता अत्यंत महत्वपूर्ण तीसरा पक्ष है और सामूहिक सौदेबाजी के स्थान पर राष्ट्रीय**

प्रतिबद्धता के विचार को स्वीकृति मिलनी चाहिए । अपने लक्ष्य और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भारतीय मजदूर संघ राष्ट्रवाद व देशभक्ति केअनुरूप सभी न्याय–संगत साधनों को प्रयोग में लाए जाने का पक्षधर है ।

प्रतिनिधित्व

देश का सब से बड़ा श्रम संघ होने के नाते इसे केन्द्रीय सरकार द्वारा गठित लगभग सभी औद्योगिक द्विपक्षीय/त्रिपक्षीय समितियों, न्यासों व परिषदों में प्रतिनिधित्व प्राप्त है । इसी प्रकार का प्रतिनिधित्व प्रादेशिक स्तर की समितियों में भी प्राप्त है । भारत में श्रम संबंधी सर्वोच्च त्रिपक्षीय मंच भारतीय श्रम सम्मेलन, स्टैंडिंग लेबर कमेटी, केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, राज्य कर्मचारी बीमा, भविष्य निधि, राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद्, बी एच ई एल, एन टी पी सी, एन एच पी सी, बी ई एल, कोयला, बीमा आदि सार्वजनिक प्रतिष्ठानों की नेगोशिएटिंग समितियों के साथ–साथ जूट वस्त्रोद्योग, ईन्जीनियरिंग, कैमिकल्स, खाद, चीनी, बिजली, परिवहन इत्यादि संबंधी बोर्डों व इसी प्रकार के अन्य उद्योगों अथवा विभागों में इसे श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करने का स्थान मिला हुआ है ।

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के अनुरूप कार्यकलाप

राष्ट्रवाद आधारित होने के कारण स्वाभाविक है कि इसकी गतिविधियों में यह भाव दृष्टिगोचर हो । राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए श्रमिक हित संरक्षण एवं संवर्धन करने के लिए संगठन कृत संकल्प है । सामूहिक सौदेबाजी के समय राष्ट्रीय प्रतिबद्धता के दृष्टिगत् वार्ता द्वारा समस्या का समाधान किया जायेगा । मजदूर हित, उद्योग हित तथा राष्ट्रहित एक ही दिशा में जाने वाले हैं और इनमें कोई विरोध नहीं है ।

प्रेरणाकेन्द्र भगवा ध्वज

राष्ट्र में व्याप्त उच्चतम् परम्पराओं, पवित्र

भावनाओं, त्याग, तपस्या एवं बलिदान का प्रतीक हमारा भगवा ध्वज है । यह हमारा स्फूर्ति केन्द्र है । ट्रेड यूनियन क्षेत्र में भारतीय मजदूर संघ आगमन के साथ भगवे ध्वज का प्रवेश हुआ । भगवे ध्वज के मध्य में संगठन का प्रतीक चिन्ह 'मानवीय अंगूठा' भगवे के साथ–साथ लहराता है । ट्रेड यूनियन क्षेत्र में यह प्रथम बार हुआ कि मानवीय अंग को प्रतीक चिन्ह माना गया । अंगूठा हाथ की चारों उंगलियों को एक साथ रखने और उपर से स्पर्श करने की सार्मथ्य रखता है । यह निर्माण का जनक, कर्मशक्ति पुंज और संगठन का द्योतक है । इसके साथ उद्योग चक्र तथा गेंहू की बाली औद्योगिक व कृषी क्षेत्र समृद्धि की परिचायक है ।

राष्ट्रीय श्रम दिवस : विश्वकर्मा जयन्ती

मजदूर व गैर मजदूर में भेद करने वाला तथा मानव या समाज को दो वर्गों में बांटने वाला नहीं अपितु सभी मानव एक हैं की घोषणा करने वाला और श्रम की गरिमा स्थापित करने वाला विश्वकर्मा जयन्ती का पावन दिवस ही भारतीय मजदूरों का राष्ट्रीय श्रम दिवस है । विश्वकर्मा जयन्ती आदिकाल से भारत में प्रत्येक वर्ष कन्या संक्रान्ति के दिन मनाई जाती है । भारतीय मजदूर संघ इसे राष्ट्रीय श्रम दिवस के नाते प्रत्येक वर्ष १७ सितम्बर को मनाता है ।

विचारधारा के अनुरूप नारे

मजदूर क्षेत्र में प्रचलित अवैज्ञानिक तथा घृणा पर आधारित विघटनकारी नारों के स्थान पर हमने सार्थक और सृजनात्मक नारे दिये हैं । जैसे **'दुनिया भर के मजदूरों एक हो - एक हो'** के स्थान पर हमने नारा दिया **'मजदूरों दुनिया को एक करो - एक करो'** । इसी प्रकार हमारे कुछ नारों की वानगी इस प्रकार है :–

भारत माता की जय
देश के हित में करेंगे काम,
काम के लेंगे पूरे दाम

मजदूर संघ की क्या पहचान,
त्याग तपस्या और बलिदान
देश की रक्षा पहला काम,
सबको काम बांधो दाम
असली वेतन सबको दो, मूल्यों का नियंत्रण हो
श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण हो
राष्ट्र का उद्योगीकरण हो
उद्योगों का श्रमिकीकरण हो
आय विषमता समाप्त हो, एक दस अनुपात हो
विलम्बित वेतन के नाते, सभी को बोनस दो

लक्ष्य और उद्देश्य

भारतीय मजदूर संघ के संक्षेप में लक्ष्य और उद्देश्य इस प्रकार है :–

(क) भारतीय मान्यताओं पर आधारित समाज की पुर्नस्थापना जिसमें निम्नलिखित के लिए आश्वस्त किया जायेगा :–

(१) श्रम शक्ति तथा स्त्रोतों का पूरा सदउपयोग ताकि सभी को राजगार मिले और अधिकतम उत्पादन किया जा सके ।

(२) मुनाफाखोरी के भाव को सेवाभाव में बदलना जिससे आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना की जा सके और परिणामस्वरूप संपत्ति का बंटवारा बराबर इस प्रकार हो जिसका लाभ सभी नागरिकों तथा पूरे राष्ट्र को मिले ।

(३) स्वायत्तशासी औद्योगिक समूहों को इस प्रकार विकसित करना जिससे वह राष्ट्र के अभिन्न अंग बनकर उद्योगों के श्रमिकीकरण का रास्ता साफ कर सकें ।

(४) प्रत्येक हाथ को लिविंग बेज के साथ काम उपलब्ध कराना जिसके लिये समूचे राष्ट्र में अधिक से अधिक उद्योगों की स्थापना करना ।

(ख) उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हित श्रमिकों के सामर्थ्य में वृद्धि करना और उन्हें इतना बलशाली

बनाना की वह अपने हितों का संरक्षण और संवर्धन शेष समाज के अनुरूप स्वयं कर सकें । इसके लिये :–

(१) व्यक्तिगत् विश्वासों तथा राजनितिक पसंद से उपर उठकर श्रमिकों को संगठित करते हुए श्रम संघ निर्माण करना जो मातृभूमि सेवा का माध्यम बनें ।

(२) संबद्ध यूनियनों का मार्गदर्शन करना, निर्देश देना, देखरेख करना और गतिविधियों में तालमेल बिठाना ।

(३) संबद्ध यूनियनों को प्रदेश तथा औद्योगिक महासंघ निर्माण में सहायता करना । यह प्रदेश व महासंघ भारतीय मजदूर संघ के घटक के रूप में कार्य करेंगे ।

(४) श्रम संघ आन्दोलन में एकता स्थापित करना ।

(ग) श्रमिकों के लिये निम्नलिखित सुनिश्चित करना :–

(१) काम का अधिकार, सेवा सुरक्षा की गांरटी, सामाजिक सुरक्षा, ट्रेड यूनियन गतिविधियों के संचालन का अधिकार और सभी न्यायाचित् उपाय समाप्त हो जाने के उपरांत अपनी समस्या समाधान हेतु पूर्ण हड़ताल का अंतिम अस्त्र के नाते प्रयोग ।

(२) काम की शर्तों में सुधार तथा निजी एवं समाजिक व औद्योगिक जीवन में उत्थान

(३) राष्ट्रीय न्यूनतम के दृष्टिगत् लीविंग बेज एवं मुनाफे में उद्योग के भागीदार के नाते वांछित हिस्सेदारी ।

(४) अन्य समुचित सुविधाएं प्राप्त करना ।

(५) श्रमिकहित में विद्यमान श्रम अधिनियमों को पूरी तरह लागू तथा यथाआवश्यक संशोधन करना ।

(६) श्रमिक प्रतिनिधियों के परामर्श से नये श्रम कानूनों की रचना करना ।

(घ) श्रमिक के मन में सेवा भाव तथा उद्योग के प्रति जवाबदेही जिम्मेदारी की भावना जगाना ।

(ड़) अभ्यास वर्ग, अध्ययन शिविर, बौद्धिक वर्ग, सैमिनारों आदि द्वारा श्रमिक का शिक्षण–प्रशिक्षण

करना और इस कार्य में केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, श्रम अनुसंधान केन्द्र, राष्ट्रीय श्रम संस्थान व विश्वविद्यालयों की सहायता प्राप्त करना ।

(च) साप्ताहिक पाक्षिक या मासिक पत्र, पत्रिकाओं, पत्रकों, पुस्तकों, चित्रों और श्रम व श्रमिक संबंधी अन्य अनेक प्रकार के साहित्य को स्वयं प्रकाशित करना अथवा प्रकाशन में सहायक होना और इस प्रकार के साहित्य की खरीद बिक्री करना ।

(छ) श्रम अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना करना ।

(ज) साधरणतया वह सभी कदम उठाना जिनसे श्रमिकों का सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक और स्वास्थ्य संबंधी स्थितियों में बेहतरी हो । अच्छे स्वास्थ्य के दृष्टिगत् संगठन किसी प्रकार के नशे, ड्रग्स, सुरापान अथवा धुम्रपान के विरूद्ध है ।

(झ) जनसाधारण के लिए सामान्यतः किन्तु श्रमिक और उसके परिवार के कल्याण व मनोरंजन के लिए विशेषतया कोआपरेटिव सोसायटी, परिवार कल्याण केन्द्र तथा क्लब की स्थापना करना ।

श्रम आन्दोलन को नया मोड़

भारतीय मजदूर संघ ने कुछ ऐसे नये विचार दिये हैं जिनसे श्रम आन्दोलन को नये आयाम प्राप्त हुए है ।

दलगत् राजनिति निरपेक्ष श्रम संघ के भारतीय मजदूर संघ विचार को भारत ही नहीं अपितु देश के बाहर भी स्वीकृति मिल रही है । वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन के बारहवें मास्को सम्मेलन सन् १९९० में इस आशय का दस्तावेज मंजूर किया गया ।

भारतीय मजदूर संघ मार्क्स द्वारा प्रतिपादित वर्ग थ्योरी को अमान्य करता है और इसके स्थान पर अन्याय के प्रति संघर्ष किए जाने का पक्षधर है ।

गैर राजनैतिक होने के कारण भारतीय मजदूर संघ का किसी भी लोकतांत्रिक पद्धिति द्वारा निर्वाचित

सरकार के साथ व्यवहार प्रत्युत्तरीय सहयोग (रिसपांसिव को–आपरेशन) का रहेगा ।

भारतीय मजदूर संघ के 'उद्योगों का श्रमिकीकरण' विचार पर भी राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा चल रही है । इसमें श्रमिक सामूहिक तौर पर औद्योगिक ईकाईयों का प्रबंध तथा स्वामीत्व संभालेंगे । इस प्रकार का परीक्षण सफलतापूर्वक न्यू सैंट्रल जूट मिल बंगाल में किया गया है ।

नई आर्थिक नीति एवं नई औद्योगिक नीति

उपरोक्त नीति का विरोध करते हुए भामस पहला श्रम संघ है जिसने द्वितीय आर्थिक स्वतंत्रता संग्राम का नारा दिया है । साथ ही साथ इसने कुछ रचनात्मक विकल्प भी सुझाए हैं । विश्व बैंक व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा हमारे देश पर थोपी जा रही शर्तों का इसने जोरदार विरोध किया है क्योंकि इन शर्तों के कारण हमारी सार्वभौमिकता ही खतरे में पड़ सकती है । अतः आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी मॉडल प्रस्तुत करने की चुनौती को भामस ने स्वीकार किया है और इसके लिए सर्वप्रथम स्वदेशी उत्पाद प्रयोग में लाए जाने की मुहिम छेड़ दी है । इसने घाटे में चल रहे उन सभी सार्वजनिक प्रतिष्ठानों को लाभकारी उद्योग में बदलने के लिए पूरा सहयोग देने की पेशकश की है और श्रमिकों से आग्रह करने पर सहमति व्यक्त की है कि वह अपने–अपने उद्योग को मजबूती से चलाएं ।

अनाप–शनाप मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति जिसके कारण मंहगाई बढ़ती है को रोकने के लिए इसने सरकार को सुझाव दिया है कि उपभोक्ता को उपभोक्ता वस्तु के लागत मूल्य की जानकारी दी जानी चाहिए । इसके परिणामस्वरूप मूल्यों पर नियंत्रण रखा जा सकेगा ।

भामस रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए कृषी विकास तथा कृषी आधारित छोटे–बड़े उद्योग लगाए जाने पर जोर देता है । विश्वकर्मा सैक्टर स्वयं रोजगार क्षेत्र को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ।

आधुनिक तकनीक के बारे में भामस किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं है किन्तु इस विषय पर हमारा स्पष्ट मत है कि हमें हमारी परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं की तकनीक का विकास करना चाहिए । इसके लिए राष्ट्रीय तकनीक नीति बनाई जानी चाहिए ।

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध

भारत का सब से बड़ा केन्द्रीय श्रम संगठन होने के नाते भामस को अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संस्था (आई. एल. ओ.) के प्रत्येक वर्ष होने वाले त्रिपक्षीय अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन जिनेवा में प्रतिनिधि का दर्जा प्राप्त है । भामस को अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक श्रमिक संस्थाओं से सम्मेलनों में भाग लेने के लिए आमंत्रण प्राप्त होते हैं । विगत् ५–६ जून २००० को न्यूयार्क (अमेरिका) में संयुक्त राष्ट्र संघ (यू एन ओ) द्वारा 'महिला–२००० बराबरी, विकास और २००१ शताब्दि' शान्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया था । सारे विश्व से महिला प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित हुई । भामस संबद्ध अखिल भारतीय आंगनवाड़ी कर्मचारी महासंघ की महामंत्रि भारतीय कामकाजी महिलाओं के प्रतिनिधि के नाते वहां उपस्थित रहीं ।

भामस अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संस्था के दिल्ली स्थित कार्यालय से अच्छे संबंध बनाए रखता है और लगभग सभी देशी क्षेत्रीय सैमिनारों, सम्मेलनों में विभिन्न विषयों पर अपने दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है ।

भामस किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन या परिसंघ से संबद्ध नहीं है किन्तु सभी के साथ सहज बराबरी के संबंध बनाए रखता है ।

यह कहने के बजाए कि दुनिया भर के मजदूरों

एक हो–हमारा कहना है मजदूरों दुनिया को एक करो ।

अन्य गतिविधियां

भारतीय श्रम शोध मंडल

भारतीय श्रमशोध मंडल का भामस द्वारा २६ मई १९८० को निर्माण किया गया । औद्योगिक क्षेत्र में अपने नाम के अनुसार तथ्यों की जानकारी प्राप्त करके उनका परीक्षण तथा अध्ययन करते हुए नई जानकारियां प्राप्त करना और संगठन को इस क्षेत्र की गतिविधियों की नवीनतम् जानकारियां उपलब्ध कराना । इसके साथ ही साथ :–

(क) सामाजिक परिस्थितियों की जांच पड़ताल ।

(ख) वार्षिक बजट की समीक्षा ।

(ग) लेबर कानूनों पर विचार के लिए त्रिपक्षीय सम्मेलनों का आयोजन करना ।

(घ) नई आर्थिक और औद्योगिक नीतियों का श्रमिक और अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

(ड़) साहित्य प्रकाशन ।

सर्वपंथ समादर मंच

भामस का दृढ़ विश्वास हे कि जाति धर्म नस्ल को आधार बनाकर श्रमिक के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए । इसलिए भामस सर्वधर्म समभाव को अपनाते हुए सभी धर्मो के लिए सम्मान की भावना रखता है । इस भावना को मूर्तरूप देने के लिए भामस ने १९९४ में 'सर्वपंथ समादर मंच' की स्थापना की है । मौलाना वहीउद्दीन व जाल. पी. जिमी इसके संस्थापक सदस्य हैं । प्रत्येक वर्ष २५ मार्च को एकात्मता दिवस के रूप में मनाया जाता है । इसी दिन शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दु मुस्लिम एकता की खातिर शहीद हुए थे ।

विश्वकर्मा श्रमिक शिक्षा संस्था

भामस की केन्द्रीय कार्यसमिति बैठक २६ अप्रैल १६८२ शिमला में एक प्रस्ताव द्वारा विश्वकर्मा श्रमिक शिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई और इसका मुख्यालय नागपुर है । केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड के सहयोग से इस शिक्षण केन्द्र द्वारा अभ्यास वर्ग तथा कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है ।

पर्यावरण मंच

सन् १६६५ में भामस द्वारा पर्यावरण मंच की स्थापना की गई ताकि ट्रेड यूनियन जिसकी गतिविधि मुख्यतया वेतन, बोनस तक सीमित थी उसे पर्यावरण से भी जोड़ा जाए । ट्रेड यूनियन की यह जिम्मेदारी है कि वह अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ, सुरक्षित व प्रदूषण रहित बनाए रखें । तीन दिसम्बर प्रत्येक वर्ष भोपाल त्रासदी दिवस के नाते 'और आगे कोई भोपाल नहीं' स्मरण किया जाता है ।

विश्वकर्मा चेतना एवं विश्वकर्मा संकेत

राष्ट्रीय स्तर पर जो भी घटित हो रहा है उससे अपने सदस्यों को समाचार और विचार द्वारा समसामयिक जानकारी प्रदान करने हेतु केन्दीय कार्यालय दिल्ली से विश्वकर्मा चेतना हिन्दी तथा विश्वकर्मा संकेत अंग्रेजी में राष्ट्रीय स्तर के मासिक पत्र प्रकाशित किए जाते हैं । प्रादेशिक तथा क्षेत्रीय भाषाओं में भी मासिक समाचार पत्र प्रकाशित किए जाते हैं उनमें मुख्यतः मजदूर भारती (मलयालम) मजदूर सम्वाद (बंगाली), मजदूर वार्ता (मराठी पाक्षिक), भामस सीदी (तमिल) और मजदूर चेतना (गुजराती) आदि प्रकाशित होते हैं । इनके अतिरिक्त भामस से सम्बद्ध अनेक अखिल भारतीय विभागीय तथा औद्योगिक महासंघ भी अपने अपने पाक्षिक अथवा मासिक समाचार पत्र प्रकाशित करते हैं ।

भारतीय मजदूर संघ के प्रकाशन

क्रम स०	पुस्तक का नाम
१.	राष्ट्र
२.	बी. एम. एस. क्यों
३.	आय, भत्ते, उत्पादकता एवं रोजगार
४.	राष्ट्रीय एकता आवाम श्रमिक क्षेत्र
५.	कम्प्यूटर - द जॉब ऐलीमिनेटर
६.	प्रस्तावना
७.	सूई जेनेरिस
८.	इन्डियाज प्लान्ड पावर्टी
६.	चार्टर ऑफ डिमाण्डस्
१०.	औद्योगिक संबंध
११.	लैबोराइजेशन ऑफ इन्डस्ट्रीज नीड ऑफ द आवर
१२.	डंकल ड्राफ्ट
१३.	स्पेक्ट्रम
१४.	कार्यकर्ता की मनोभूमिका
१५.	संकेत रेखा
१६.	लक्ष्य और कार्य
१७.	कन्ज्यूमर : ए सोवरेन विदाउट सोवरेनिटी
१८.	सप्त क्रम
१६.	केन्द्रीय जूट मिल की कहानी
२०.	ट्रेड यूनियन मूवमेंट इन इंडिया
२१.	पर्सपेक्टिव
२२.	तीसरा विकल्प
२३.	शून्य से सृष्टि तक
२४.	आर्थिक स्वतंत्रता की दूसरी लड़ाई

श्री दत्तात्रेय बापूराव
उपाख्य दत्तोपंत ठेंगडी
संस्थापक
भारतीय मजदूर संघ

महाराष्ट्र प्रदेश, वर्धा जिले के आर्वी गांव में १० नवम्बर १९२० में जन्में श्री दत्तोपंत ठेंगडी कुशल संगठनकर्ता तथा सुविख्यात विद्वान हैं । लगभग आधी शताब्दि से वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संध के प्रचारक हैं । भारतीय मजदूर संघ जिस की पैतालिस वर्ष पूर्व उन्होंने स्थापना की आज देश में सबसे बड़ा केन्द्रीय श्रम संगठन है । उन्होंने भारतीय किसान संघ, समाजिक समरसता मंच, स्वदेशी जागरण मंच, सर्वपंथ समादर मंच तथा पर्यावरण मंच की भी स्थापना की है । वह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद व सहकार भारती के संस्थापक सदस्य हैं

श्री ठेंगडी बारह वर्षो तक राज्यसभा के सदस्य रहे हैं। उन्होंने देश विदेश का बहुत भ्रमण किया है । जन समुदाय और समाज में राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करने के लिए सतत् संगठन कार्य करते रहने के साथ ही साथ श्री ठेंगडी हिन्दी, अंग्रेजी व मराठी के समर्थ और सार्थक लेखक हैं । उनके द्वारा लिखित पुस्तकों एवं संपादित अन्य रचनाओं की संख्या सौ से भी अधिक हैं । उनके द्वारा लिखित तीसरा विकल्प, राष्ट्र, प्रस्तावना, सप्तक्रम, कार्यकर्ता की मनोभूमिका, संकेत रेखा, लक्ष्य और कार्य, कम्युनिज्म अपनी ही कसौटी पर इत्यादि प्रमुख रचनाए हैं ।

मुद्रक : जूपिटर प्रिंटर्स
१३६-बी, ईस्ट मोती बाग, सराय रोहिल्ला, दिल्ली-११०००७
दूरभाष ३५४४३७८, ३५२७३६७
संकलन एव सम्पादन : अमर नाथ डोगरा,
राष्ट्रीय मंत्री (मुख्यालय) भामस